हरे-भरे ये पेड़ पितामह



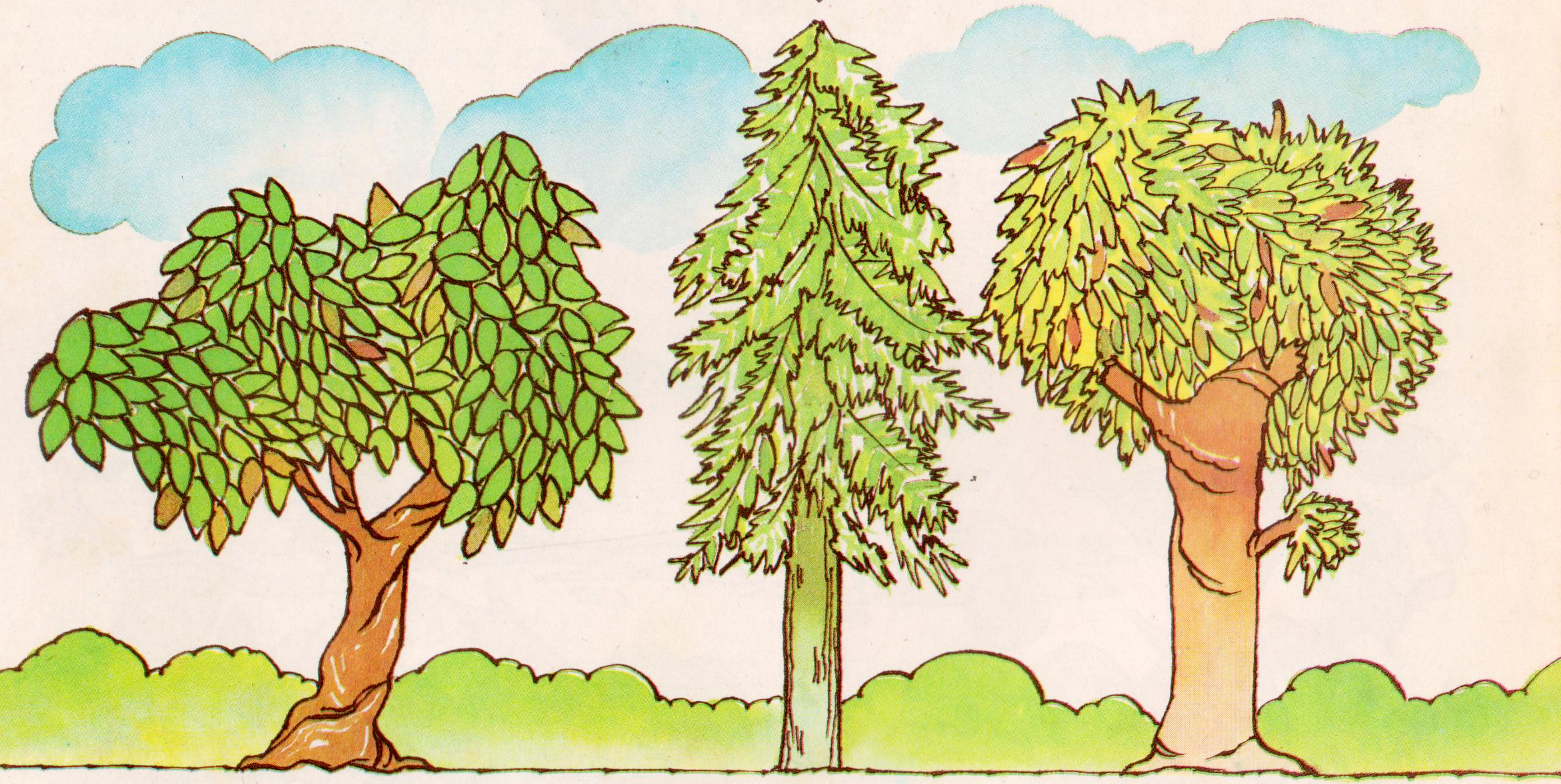
बाल कथा-3

मधुबन



लेखिका : शीला शर्मा
चित्रांकन - नितीन अडके

हरे-भरे ये पेड़ पितामह



मधुबन



हरे-भरे ये पेड़ पितामह

यह कथा है एक छोटे से लड़के की, एक बरगद की, और उसके आस-पास के अनेक पेड़ों की ।

.... एक गाँव में अमल नाम का एक लड़का रहता था । अमल अकेला था– उसके माँ-बाप मर चुके थे । पर गाँव के सब लोग उसे बहुत प्यार करते थे ।

एक दिन अमल को कहीं से एक गेंद मिल गई । वह गेंद से खेलने लगा । खेलते-खेलते गेंद एक झाड़ी में चली गई । अमल ने देखा कि उस कंटीली झाड़ी के बीच एक नन्हा सा पौधा दबा जा रहा है। गेंद निकालते समय अमल सोचने लगा – ये बड़ी-बड़ी झाड़ियाँ इस पौधे की सारी धूप रोक लेंगी, उसका सारा पानी सोख लेंगी और वह प्यासा ही रह जाएगा[1]। इन झाड़ियों के बीच भला वह बढ़ेगा कैसे ?

उसने जल्दी से सारी झाड़ियाँ काट दीं और सोचा – अब ठीक है, अब तो पौधे को हवा भी मिलेगी और धूप भी । उसकी जड़ें भी फैल पाएँगी । धीरे-धीरे वह खूब बड़ा हो जाएगा और धरती से मन भर के पानी पी सकेगा ।

झाड़ियाँ तो कट चुकी थीं । पत्तों का एक दोना बनाकर अमल ने पास के एक तालाब से उस नन्हें पौधे को पानी दिया । पानी पीकर पौधा हवा में झूमने लगा । उसे झूमते देखकर अमल बहुत खुश हुआ ।

अमल अब रोज़ वहाँ जाता और उस पौधे को पानी देता । दिन बीतते गये.... वह बिरवा[2] और



अमल दोनों साथ-साथ बड़े होने लगे।

बच्चो, जानते हो – वह बढ़ता हुआ पौधा किसका था ? वह पौधा था बरगद का।

बरगद के उस पेड़ के प्रति अमल का स्नेह भी बढ़ता गया। पेड़ की डालियाँ मज़बूत हुईं तो अमल उन पर चढ़कर लटकता और झूलता। उस पेड़ के पास जाकर अमल को ऐसा लगता जैसे वह अपने किसी प्रिय साथी के निकट बैठा हो।

एक दिन बरगद ने अन्य पेड़ों से कहा – सुनो, साथियो ! आम, नीम, केला, कटहल, ताड़, खजूर, बाँस, सब सुनो ! भाई देखो, यह लड़का हमारे साथ कितने प्यार से रहता है। हमको पानी देता है। हमारे आस-पास की घास निकालकर सफ़ाई करता है। हमारी छाल पर अपना नाम खोद कर हमें कष्ट नहीं देता, न कुल्हाड़ी चला कर हमें घायल करता है और न ही हमारी डालियों को तोड़ता व काटता है। जब अमल हमारा इतना ध्यान रखता है तो हमें भी उसकी ज़रूरतों का ख़्याल करना चाहिये।

बरगद के आस-पास के सभी वृक्ष सिर हिला-हिला कर झूमने लगे। ऐसा लग रहा था मानो कह रहे हों – ठीक है ! ठीक है !

अब सब वृक्ष अमल का ध्यान रखने लगे। कुछ पेड़ उसे खाने को फल देते तो कुछ सोने के लिए छाया। जब अमल खेलने आता तो वे अपनी डालें झुकाकर हिलने लगते और अमल उनमें झूलता।

कुछ बड़ा होने पर अमल ने अपने लिए एक घर बनाया।

सब वृक्षों ने कहा – चलो ! चलो ! इसकी मदद करें।



अपनी पत्तियाँ फैलाकर पास के पेड़ों ने उसके घर पर छाया कर दी।

नीम[3] का पेड़ बोला – मैं अमल के घर का संतरी बनूँगा। मेरे पीछे खड़े रहने से आस-पास की हवा साफ़ रहेगी तथा धूप और सर्दी से रक्षा भी होगी।

केले का पेड़ बोला – अरे ! उसको भूख भी लगती होगी। फल तो मैं दूँगा।

पास के तालाब में खिले कमल के पत्तों और वट वृक्ष की ओर देखकर केले का पेड़ फिर बोला – बताओ, तुम दोनों में से पत्तल कौन बनेगा ? अच्छा रहने भी दो, मैं ही अपने पत्ते बिछा कर यह काम कर देता हूँ।

परन्तु हुआ यह कि केले के पत्ते के आने से पहले ही कमल का गोल-गोल हरा पत्ता वहाँ पहुँच कर खाने का पत्तल बन चुका था, और वट वृक्ष के पत्ते भी आपस में गुँथ कर पत्तल बना चुके थे।

इतनी सारी पत्तलों को देखकर सब फलों के वृक्ष उन्हें भरने लगे। केला, आम, जामुन, पपीता, अमरूद, सेब, लीची, सन्तरा, अनार, अंगूर, चीकू, नाशपाती – सभी तरह के फल उन पर गिरने लगे।

नारियल के पेड़ ने कहा – अमल को प्यास लगी होगी। मीठे-मीठे पानी से मैं उसकी प्यास बुझाऊँगा। और नारियल के पेड़ ने झुककर अपना एक कच्चा फल नीचे गिरा दिया।

अमल के सोने के लिए भी तो कुछ चाहिए था। तभी पानी में उग रही सेवार की घास चटाई बुनने लगी।

दूसरी तरफ से बाँस के पत्ते बोले – अरे भाई ! एक चटाई तो हमारी भी बन सकती है।



सेवार बोली – आ जाओ, आ जाओ ! नेक काम में देरी क्या ?

सेवार और बाँस की पत्तियाँ चटाइयों में गुँथ गईं और इस तरह अमल के सोने का इन्तज़ाम भी हो गया। उधर ताड़ और बाँस की पत्तियाँ पंखा बन उसे रोज़ रात हवा करतीं।

दोपहर बाद अमल जब बन में घूमने निकलता तो सभी वृक्ष प्यार से झूम-झूम कर उसे एक अतिथि का सम्मान देते। कभी गन्ने का पौधा आगे बढ़कर उसे रस चूसने को कहता। तो कभी इलायची और सुपारी के पौधे उसे न्यौता देते। उसे देखकर चाय की नन्हीं-नन्हीं पत्तियाँ भी पास की पहाड़ियों पर हिलने लगतीं, मानो कह रही हों – अमल चाय पियोगे ?

एक दिन भोज वृक्ष ने अपने ऊपर लिपटी हुई छाल उतार कर अमल की ओर बढ़ा दी और कहा – यह भेंट तुम्हारे लिए है। इस छाल को कपड़ों की तरह श्री राम ने भी बनवास में पहना था।

अमल का मन बन में लगे वृक्षों को देखकर बहुत प्रसन्न होता। एक दिन वह अपने प्रिय बरगद के नीचे बैठा उन सब पेड़ों की शोभा देख रहा था... तभी उसका ध्यान चहचहाती चिड़ियों की ओर गया।

वह आस-पास के पक्षियों को पहचानने की कोशिश करने लगा। कोयल, कौवा, हुदहुद, गौरैया, मैना, तोता, बुलबुल, इन सबको तो अमल पहचानता था। सामने एक मोर आसमान के बादलों को देख पंख फैला रहा था। एक तने के खोखले में छिपा उल्लू अपनी गोल-गोल आँखें घुमा रहा था। उधर चील अपना घोंसला ऊँचे से एक पेड़ पर बनाये बैठी थी। फूलों पर तितलियाँ और भँवरे मंडरा रहे थे।



पेड़ों की डालियों पर बन्दर, बिल्ली, लंगूर, गिलहरी, गिरगिट, खरगोश, चूहे आदि इधर-उधर दौड़ रहे थे, जैसे आपस में आँख-मिचौनी खेल रहे हों। घने पेड़ों की छाँव में गाय और कुछ बकरियाँ बैठी सुस्ता रही थीं। दूर जंगल में हाथी के चिंघाड़ने की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी।

चिड़ियों की चहचहाट और भंवरों का गुंजन सुनते-सुनते वह अपने प्रिय बरगद की छाँव में लेट गया। उसको नींद सी आने लगी। तभी उसे लगा जैसे बरगद दद्दा लम्बे-लम्बे यूकिलिप्टिस के पेड़ों से कह रहे हों – देखो भाई अब तो अमल को स्कूल जाना चाहिए, अब तुम अपने गूदे[4] से कागज़ बनाओ।

रबड़ के वृक्ष ने कहा – तुम कागज़ बनाओगे तो मैं अपने सफेद रस से मिटाने के लिए 'रबर' बना देता हूँ।

अन्य वृक्षों ने पेंसिल, फुटरूल बनाने को लकड़ी दी और पूछने लगे – क्या मेज़-कुर्सी भी बनानी है ? आखिर अमल किस पर बैठ कर पढ़ेगा ? इन चीज़ों के लिए लकड़ी हम दे देंगे।

सर्दी आई तो रुई की झाड़ियों ने अपने सफ़ेद-सफ़ेद फूल चमकाये और कहने लगीं – हमने तो अमल के लिए तकिया, गद्दा, रजाई, टोपा, वास्कट, कोट आदि बनाने के लिए रुई कब से तैयार कर रखी है।

सर्दी की बात सुनकर पोदीना और तुलसी[5] की पत्तियाँ कहने लगीं – वह बीमार न हो इसलिए हम यहाँ बैठी हैं, फौरन इलाज कर देंगी।

समय बीतता गया। धीरे-धीरे अमल जवान हो गया। वह पढ़ लिखकर कमाने भी लगा था



इसलिए गाँव वालों ने उसकी शादी तय कर दी।...

शादी के दिन सब पेड़ झूम-झूम कर खुशियाँ मना रहे थे। तभी आम की पत्तियाँ बन्दनवार[6] बनकर लटक गईं; मेंहदी की पत्तियाँ पिसकर दुल्हन के हाथों को सजाने लगीं। आम के पत्ते कलश[7] में सजकर बहू का स्वागत करने लगे।

शहतूत के वृक्षों ने पहले ही साड़ी के लिए रेशम[8] इकट्ठा कर रखा था। कुछ फूल व पत्तियाँ वर-वधू की जयमाला[9] के लिए गुँथ कर हार के रूप में तैयार हो गईं। वृक्षों के फूल दूल्हे का सेहरा[10] बन गए, कुछ फूल बारातियों के स्वागत के लिये आगे आ गए।

बरगद दद्दा ने कहा – बिना बाजे के शादी कैसी ?

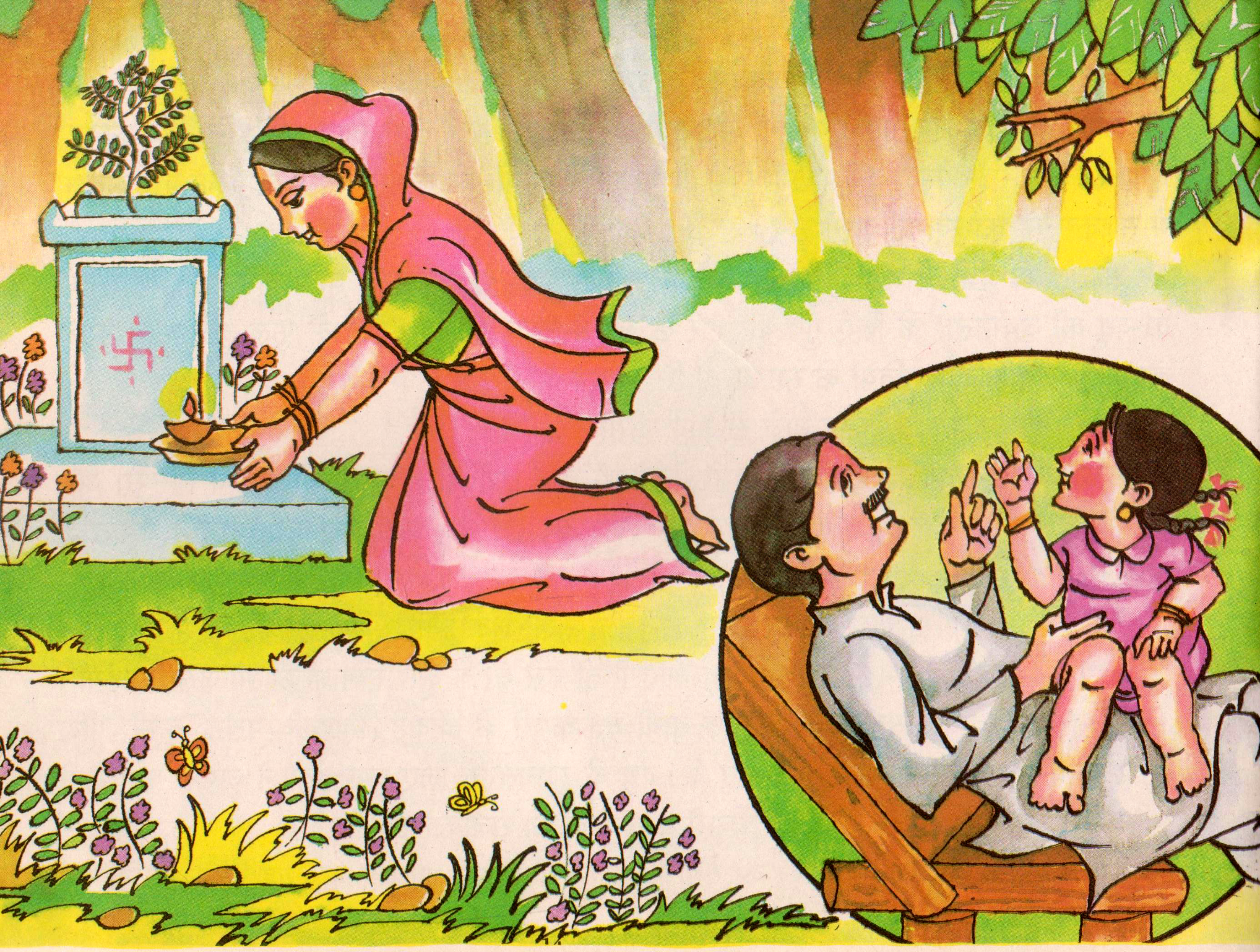
तभी बरगद ने देखा कि बाँस के वृक्षों ने बाँसुरी बना रखी थी। कुम्हड़े की बेल ने तानपुरा और कुछ अन्य वृक्षों ने ढोलक, तबला व खड़ताल तैयार कर रखे थे। सब बाजे बजाते-बजाते बारात के आगे चल दिए।[11]

विवाह में हवन होगा यह सोचकर आम के वृक्ष ने सूखी लकड़ियाँ 'समिधा'[12] के रूप में गिरा दीं।

बरगद ने सोचा – अमल के घर में वधू आएगी तो उसे घर में कुछ सामान की भी ज़रूरत पड़ेगी।

परन्तु यह क्या ? उसने देखा कि कुछ साथी वृक्ष कमरों के किवाड़, खिड़की, पलंग, कुर्सी, पीढ़ा आदि बनकर पहले से ही घर में बैठ गए थे। वधू के स्वागत के लिए कुछ वृक्षों ने अपनी पत्तियों से भिन्न-भिन्न रंग[13] निकालकर घर की दीवारों पर रंगोली की सजावट कर दी थी।

बरगद दद्दा को अमल की शादी की तैयारी देखकर बड़ा मज़ा आ रहा था। वह प्रसन्न थे कि सब



वृक्ष बड़े उत्साह से शादी में भाग ले रहे हैं।

अतिथि सत्कार की भी तैयारी करनी ज़रूरी थी। उसके लिए चावल और गेहूँ के पौधों ने अनाज दिया और भैंस, गाय, बकरी आदि ने मिठाइयों के लिये दूध। बादाम, अखरोट, अंजीर, चिरौंजी, चिलगोजा, पिस्ता[14] – सभी मेवे के वृक्षों ने टोकरियाँ भर दीं।

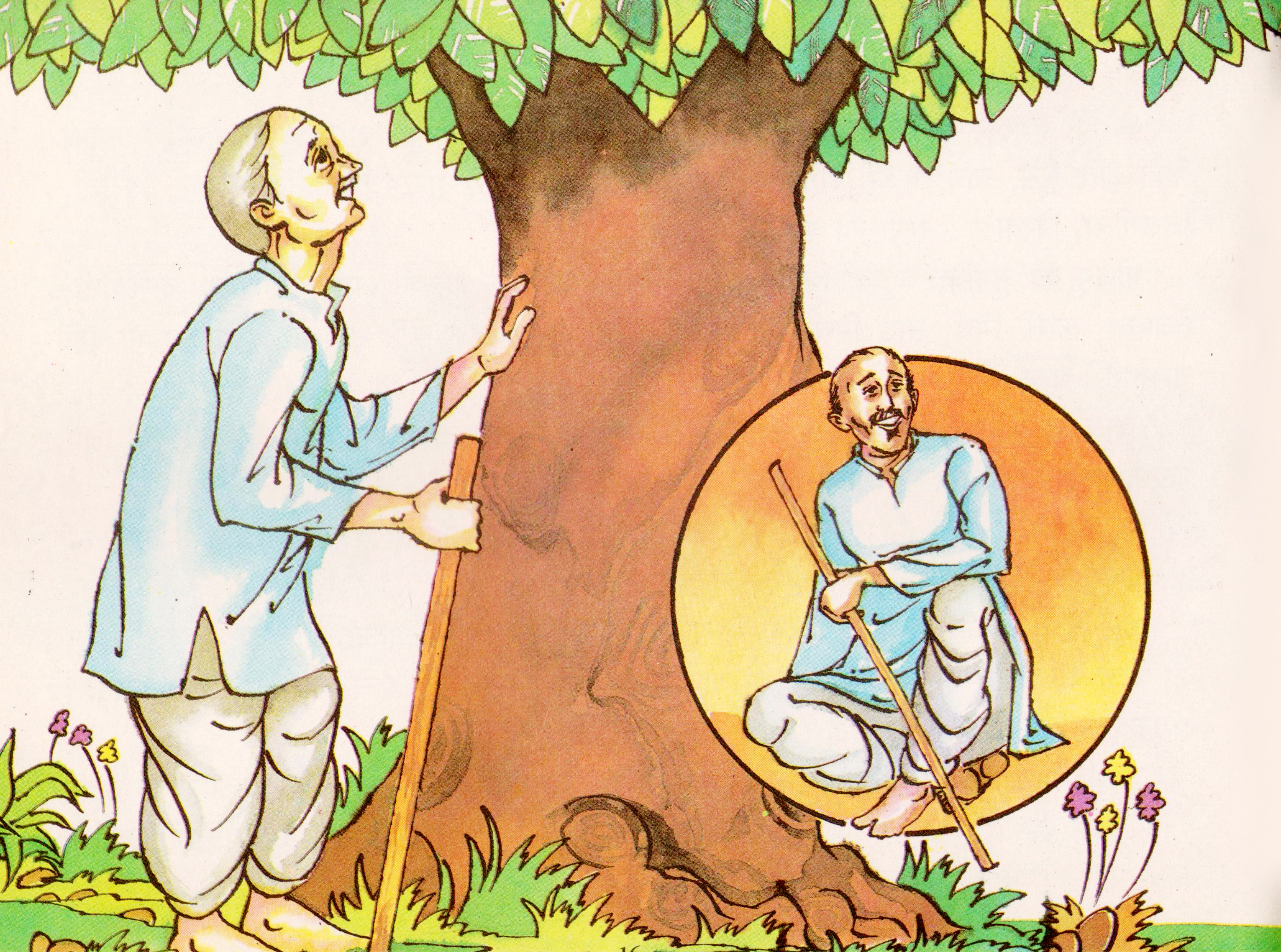
भोजन को सुगंधित व स्वादिष्ट बनाने के लिए मसालों के पेड़ भी आगे बढ़ आए। दालचीनी, तेजपत्ता, काली मिर्च, लाल मिर्च, मीठी नीम, लौंग, सभी कहने लगे – चलो, चलो हम भी वहाँ चलते हैं। भला हमारे बिना भोजन में रस कैसे आएगा ?

गृह-प्रवेश के पहले अमल और उसकी पत्नी शिव-मंदिर गए तो बेलपत्र[15] के वृक्ष ने उनके लिए अपनी बहुत सी पत्तियाँ नीचे गिरा दीं।

वधू के घर में आते ही घर और हरा-भरा हो गया। आँगन में लगे तुलसी के पौधे में वह स्वयं प्रतिदिन जल देती और रात को उसके नीचे दीपक जलाती।

वृक्षों और उनकी पत्तियों के भिन्न-भिन्न गुण और भिन्न-भिन्न आकार और रंग देखकर अमल की पत्नी को आस-पास के पेड़-पौधों में बहुत रुचि हो गई। वह अमल से नित नए सवाल पूछती। अमल उसे पेड़ों के विविध गुण और लाभ बतलाता रहता।

एक दिन अमल ने अपनी पत्नी को समझाया – पेड़ हमारे आस-पास की हवा को स्वच्छ रखते हैं और हमें बीमारियों से बचाते हैं। पत्तियाँ पेड़ की रसोई के समान होती हैं। पत्तियाँ हवा से कार्बन-डाई-ऑक्साइड, सूरज की रोशनी से गरमी, और धरती से जड़ों के द्वारा नमक[16] लेकर अपने



हरे तत्व से वृक्ष के लिए भोजन बनाती हैं।

अमल ने फिर कहा – ये पेड़-पौधे मनुष्य से पहले संसार में पैदा हुए थे। हम से पहले उत्पन्न होकर इन्होंने संसार में हमारे जन्म लेने के लिए अनुकूल वातावरण और भूमि बनाई। इस प्रकार ये वृक्ष हमारे पूर्वज हैं। ये हमें जीवित रखने के लिए प्रकृति का संतुलन बनाये रखते हैं। इनको हानि पहुँचाना वास्तव में अपने को हानि पहुँचाना है।

यह सब जानकर अमल की पत्नी बहुत हैरान हुई। वह नहीं जानती थी कि साधारण दिखने वाले ये हरे-हरे पेड़ इतने लाभकारी होते हैं।

अमल फिर बोला – प्राचीन काल से हमारे देश में वृक्षों की पूजा होती आई है। पेड़ों की असली पूजा है उनकी देखरेख करना और नए पेड़ लगाते रहना।

इस तरह अमल और उसकी पत्नी का पेड़-पौधों से दिन-प्रतिदिन प्यार बढ़ता गया।

कुछ समय बाद उनके घर एक प्यारी बिटिया ने जन्म लिया। उन्होंने फूल जैसी कोमल गुड़िया का नाम 'जूही' रखा। धीरे-धीरे जूही बड़ी होने लगी।

अमल अक्सर पेड़ों से घिरे अपने आँगन में बैठकर जूही को बताता कि पेड़ मनुष्य को कितना सुख पहुँचाते हैं। पेड़, बारिश भी करवाते हैं, मिट्टी को बहने से बचाते हैं, बाढ़ को रोकते हैं, सूखे को भी दूर करते हैं और अनेक जीव-जन्तुओं, पक्षियों का घर भी बनते हैं।

समय बीतता गया। अमल अब वृद्ध हो चुका था।

बन के वृक्षों ने बुढ़ापे में भी अमल का साथ नहीं छोड़ा। उम्र बढ़ जाने पर ये उसकी बुढ़ापे की

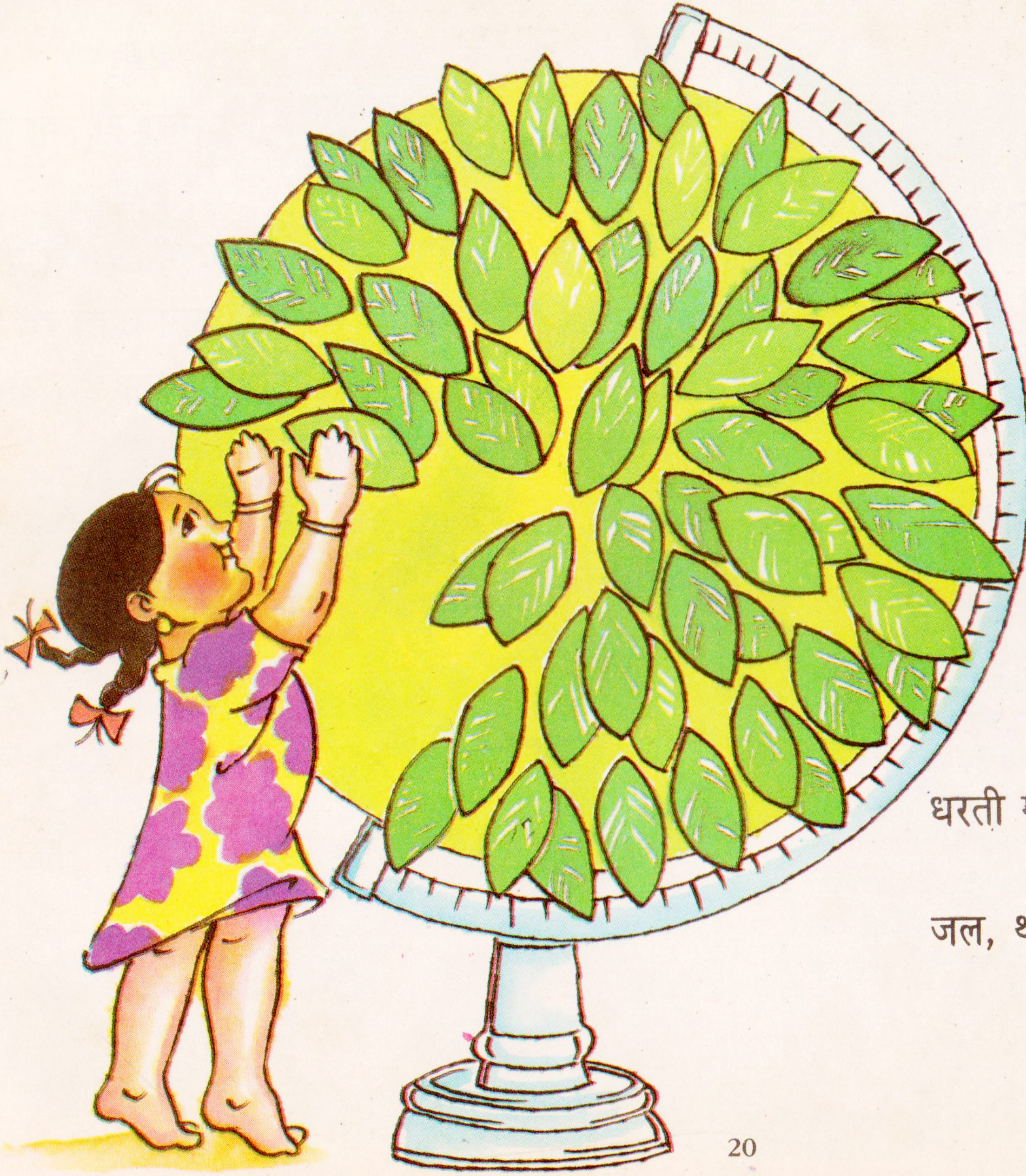


लाठी बन गए ....

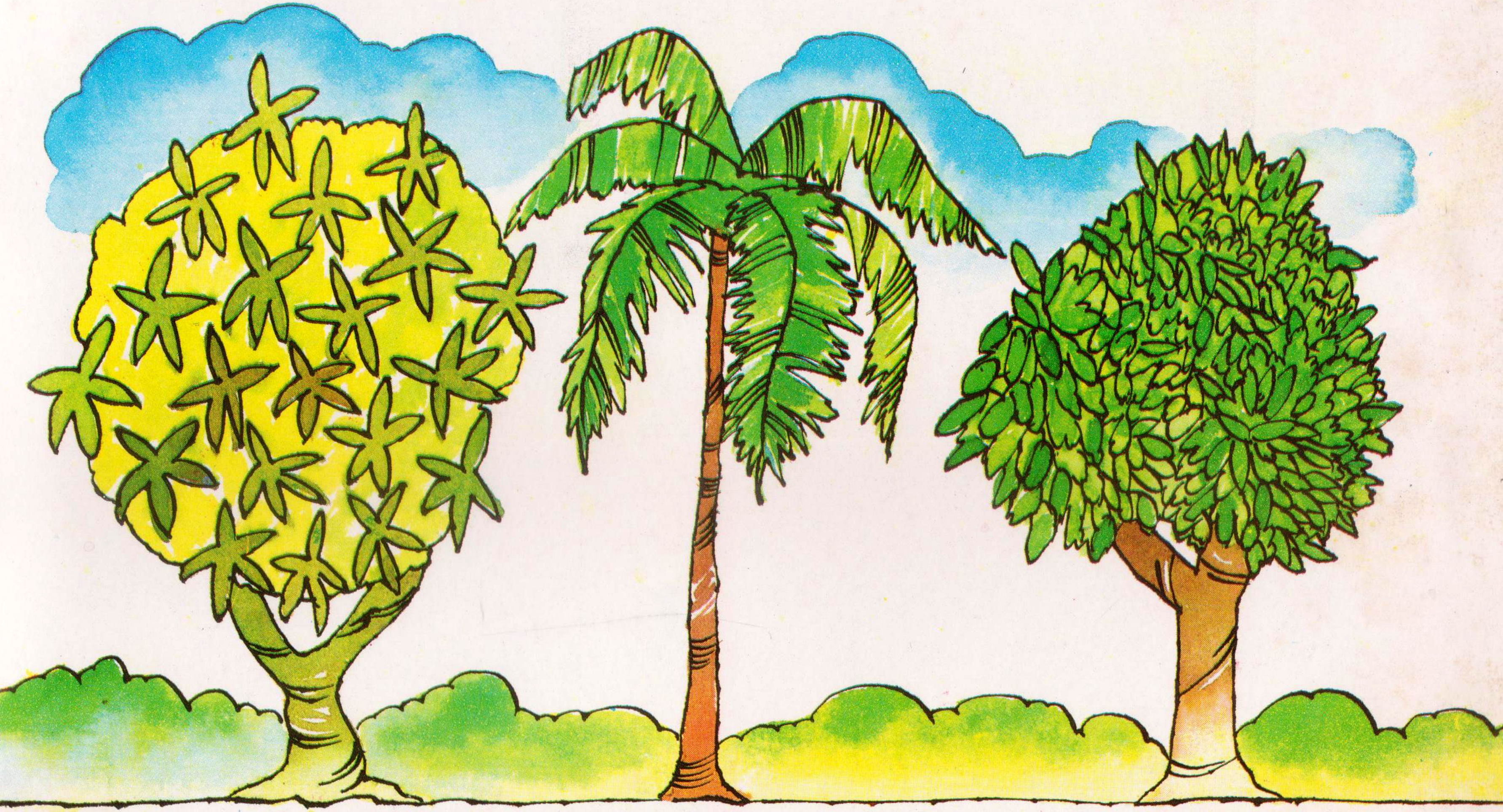
जब अमल की आयु पूरी हो चली तब उदास होकर वृक्षों ने कुछ सूखी डालें नीचे गिरा दीं, मानो उसका शरीर अपने ऊपर रखने के लिए धरती पर लेट गए हों।

जब अमल की अन्तिम यात्रा शुरु हुई तो बरगद दद्दा भरे मन से बोले – हम जीवन भर अमल के साथ रहे हैं। उसने तन-मन से हमारी देखभाल की और हम भी हर कदम पर उसके काम आते रहे। अमल आज नहीं है पर हम अभी खड़े हैं क्योंकि हमारी आयु मानव आयु से कहीं अधिक है। वह हमारे लिये सन्तान के समान था... परन्तु हम उसकी आने वाली पीढ़ियों के लिए पितामह हैं।

1 पौधों को बड़ा होने के लिए धूप, हवा और पानी की आवश्यकता होती है।
2 नन्हा पौधा।
3 नीम एक अत्यन्त लाभकारी वृक्ष है।
4 यूकिलिप्टिस के पेड़ों के पल्प या गूदे से कागज़ बनता है।
5 नीम के फल, पोदीना तथा तुलसी दवाई के रूप में प्रयोग किए जाते हैं।
6 पत्तियों की बनी झालर को बन्दनवार कहते हैं – यह शुभ अवसरों पर लगाई जाती है।
7 आम के पत्ते कलश में सजा कर वधू का स्वागत किया जाता है। ऐसा करना मंगलकारी माना जाता है।
8 रेशम के कीड़े शहतूत की कोमल पत्तियों पर पाये जाते हैं।
9 जयमाला – वह माला जो वर-वधू विवाह के पूर्व एक दूसरे के गले में डालते हैं।
10 सेहरा – फूलों की लड़ियाँ जो विवाह के पूर्व वर के चेहरे पर लटकाई जाती है।
11 संगीत के ये सब यंत्र भिन्न-भिन्न पौधों और उनके फलों से ही बनाए जाते हैं।
12 समिधा – जिस लकड़ी से हवन किया जाता है।
13 पेड़ों की पत्तियों से कई प्रकार के रंग निकलते हैं।
14 यह सब मेवे पौधों की ही देन हैं।
15 इसका प्रयोग शिव-पूजन में किया जाता है।
16 खनिज-लवण (Mineral Salts)



धरती माँ की हरित गोद में
आओ खेलें मिल-जुल हम सब,
जल, थल, गगन, पशु और पक्षी
रक्षा करें सभी की हम सब।



बाल कथा

भाग 1, 2 और 3

सात से दस वर्ष के बच्चों के लिए विशेष रूप से लिखी गई ये रोचक कहानियाँ बालकों को मनोरंजन प्रदान करने के अतिरिक्त उन्हें अपने आस-पास के वातावरण, पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों और पर्यावरण के प्रति सजग करती हैं। आकर्षक चित्रों से सजी इन पुस्तकों का उपयोग स्कूल अथवा घर में रुचिकर ढंग से किया जा सकता हैं।

MADHUBAN EDUCATIONAL BOOKS
a division of
VIKAS PUBLISHING HOUSE PVT LTD
576, Masjid Road, Jangpura, New Delhi-110 014
Phones : 4624605, 4615313, 4615570
Email : chawlap@giasdl01.vsnl.net.in
Printed at S.D.R. Printers Delhi-94

Rs 14

Reprint 1997

ISBN 0-7069-8039-5